

मोहनजोदड़ो : उत्कृष्ट नगर नियोजन से सभ्यता के अवसान तक

डॉ. सुमित मेहता*

सहायक आचार्य, राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर।

*Corresponding Author: dr.sumit28.ap@gmail.com

Citation: मेहता, सुमित (2026). मोहनजोदड़ो : उत्कृष्ट नगर नियोजन से सभ्यता के अवसान तक. *International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science*, 08(03(III)), 133–138. [https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.3\(III\).9490](https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.3(III).9490)

सार

इस शोध पत्र में सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख नगर मोहनजोदड़ो के नगर नियोजन, जल-प्रबंधन, सामाजिक एवं आर्थिक जीवन तथा इसके नष्ट होने के कारणों का विश्लेषण किया गया है। मोहनजोदड़ो लगभग 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व के बीच एक विकसित और सुव्यवस्थित नगरीय केंद्र के रूप में विकसित हुआ। नगर में पक्की ईंटों से बने भवन, व्यवस्थित सड़कें, कुएँ, स्नानागार तथा ढकी हुई नालियाँ इसकी उन्नत नगर-व्यवस्था को दर्शाते हैं। विशेष रूप से इसकी जल-निकासी और साफ-सफाई की व्यवस्था उस समय की विकसित सोच को दर्शाती है। नगर में विभिन्न प्रकार के आवास, शिल्प एवं उद्योग, कृषि उत्पादन और विभिन्न व्यापारिक गतिविधियाँ जैसे अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापार, इस नगर की विकसित आर्थिक व्यवस्था को दर्शाते हैं। साथ ही, नगर में बने विभिन्न प्रकार के मकानों के आधार पर सामाजिक वर्गों और लोगों के आजीविका के साधनों को समझने का प्रयास किया गया है। मोहनजोदड़ो के पतन के कारणों में बाढ़, नदी के मार्ग में परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन, सूखा, कृषि उत्पादन में कमी और व्यापारिक गतिविधियों का कमजोर होना आदि प्रमुख थे। इन परिस्थितियों के कारण नगर व्यवस्था धीरे-धीरे कमजोर हुई और धीरे-धीरे शहर नष्ट होने लगा। अंततः, मोहनजोदड़ो की नगर योजना, जल-प्रबंधन और पर्यावरण के प्रति अनुकूलन की परंपरा आधुनिक नगरों को एक महत्वपूर्ण सीख देती है।

शब्दकोश: मोहनजोदड़ो, सिंधु घाटी सभ्यता, नगर नियोजन, जल-प्रबंधन, जल निकासी, सामाजिक संरचना, आर्थिक व्यवस्था, व्यापार, शिल्प उद्योग, जलवायु परिवर्तन, बाढ़, वि-शहरीकरण।

प्रस्तावना

मोहनजोदड़ो की भौगोलिक स्थिति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मोहनजोदड़ो कांस्य युगीन सिंधु घाटी सभ्यता का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रशासकीय, आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र था, लगभग 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व तक का काल इसके विकास का सबसे महत्वपूर्ण काल रहा।⁽¹⁾ भौगोलिक दृष्टि से यह ऐतिहासिक स्थल वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में लरकाना जिले के अंतर्गत सिंधु नदी के दाहिने तट पर स्थित है।⁽²⁾ यह क्षेत्र एक अत्यंत उपजाऊ जलोढ़ मैदान का हिस्सा था, सिंधु नदी द्वारा लाई गई उपजाऊ मिट्टी ने यहाँ उन्नत कृषि, अतिरिक्त खाद्य उत्पादन (Food surplus) और एक बड़ी शहरी जनसंख्या के पोषण को संभव बनाया।⁽³⁾

यह नगर लगभग 250 हेक्टेयर से अधिक विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ था तथा तात्कालिक दक्षिण एशिया के सबसे विशाल और सुसंगठित महानगरीय केंद्रों में से एक माना जाता है। इस ऐतिहासिक स्थल की खोज सन् 1922 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के अधिकारी राखल दास बनर्जी ने की। उनकी इस प्रारंभिक खोज के पश्चात सर जॉन मार्शल, अर्नेस्ट मैके और सर मॉर्टिमर व्हीलर जैसे प्रमुख पुरातत्वविदों के मार्गदर्शन में विस्तृत और वैज्ञानिक उत्खनन कार्य संपन्न हुए। इन उत्खननों से एक ऐसी सभ्यता का खुलासा हुआ जो अपने समकालीन मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं के समान या उनसे भी अधिक उन्नत थी।

भौगोलिक दृष्टि से सिंधु नदी मोहनजोदड़ो के लिए एक दोहरी भूमिका निभाती थी। यह नगर के लिए जीवन रेखा होने के साथ-साथ एक निरंतर प्राकृतिक चुनौती भी थी। एक तरफ जहाँ नदी के जलमार्गों ने ओमान, पारस की खाड़ी और मेसोपोटामिया के साथ आंतरिक एवं विदेशी व्यापार को सुगम बनाया, वहीं दूसरी तरफ ग्रीष्मकालीन मानसून के दौरान आने वाली भीषण वार्षिक बाढ़ नगर के अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती थी।

इसी भौगोलिक चुनौती का सामना करने के लिए मोहनजोदड़ो के प्राचीन इंजीनियरों ने नगर को दो मुख्य भागों 'दुर्ग' (Citadel) और 'निचला नगर' (Lower Town) में विभाजित किया। नगर को पक्की हुई ईंटों के विशाल चबूतरों पर स्थापित किया। बाढ़ के विनाशकारी प्रभावों के बावजूद, नगरवासियों ने अपनी वास्तुकला को निरंतर उन्नत बनाए रखा। मोहनजोदड़ो केवल एक आवासीय बस्ती नहीं, बल्कि एक सुनियोजित शहरी केन्द्र था। यह नगर प्राचीन विश्व में उत्कृष्ट वास्तुकला का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है।

मोहनजोदड़ो का जल-प्रबंधन और आधुनिक शहरी जल निकासी

मोहनजोदड़ो का जल-प्रबंधन और अपशिष्ट जल निकासी तंत्र प्राचीन विश्व की उच्च स्तरीय निर्माण तकनीक का प्रदर्शन करता है।⁽⁴⁾ लगभग 4500 वर्ष पूर्व निर्मित यह नगर केवल वास्तुकला की सुंदरता तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सार्वजनिक स्वास्थ्य, व्यक्तिगत स्वच्छता और पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का एक अनोखा उदाहरण था।⁽⁵⁾ आज जहाँ भारत के बड़े महानगर मानसून के दौरान जलभराव, सीवर के उफान और बीमारियों के फैलाव जैसी गंभीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं, वहीं मोहनजोदड़ो की उस समय की जल निकासी की व्यवस्था सम्पूर्ण विश्व के सामने एक व्यावहारिक मॉडल प्रस्तुत करती है।

मोहनजोदड़ो की जल प्रबंधन प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता स्वच्छ जल की आपूर्ति और दूषित जल के निस्तारण का स्पष्ट पृथक्करण था। पुरातात्विक अध्ययनों के अनुसार, पूरे नगर में लगभग 700 कुएँ थे, जो पक्की ईंटों से बेलनाकार आकार में बनाए गए थे।⁽⁶⁾ शहर के लगभग हर मकान और सार्वजनिक स्थान तक पीने के पानी की पहुँच आसान थी।

अपशिष्ट जल के निस्तारण के लिए मोहनजोदड़ो में ढका हुआ सीवरेज तंत्र बनाया गया था।⁽⁷⁾ मुख्य सड़कों और गलियों के समानांतर ईंटों से बनी नालियाँ बनायी गयी थीं, जिन्हें चूने और जिप्सम के गारे से पूरी तरह जलरोधी बनाया गया था। इन नालियों को समतल बड़ी ईंटों या चूना-पत्थर की पट्टियों से ढका जाता था, ताकि दुर्गंध और बीमारियाँ न फैलें। नालियों के रखरखाव के लिए नियमित दूरी पर 'मैनहोल' (निरीक्षण छिद्र) छोड़े गए थे, जहाँ से जमा हुए कचरे को आसानी से निकाला जा सकता था।

इसके अलावा, घरों से निकलने वाले गंदे पानी और ठोस कचरे को अलग करने के लिए घरों के बाहर गड्ढे बनाए गए थे। घर का कचरा और भारी तलछट इस गड्ढे में जमा हो जाते थे और केवल ऊपरी पानी ही मुख्य सीवर में बहकर जाता था। इससे मुख्य नालियाँ कभी जाम नहीं होती थीं। मोहनजोदड़ो का सीवर तंत्र की आज की आधुनिक शहरी नालियों से निम्न प्रकार भिन्नता रखता था:-

प्राकृतिक ढाल का उपयोग

मोहनजोदड़ो के इंजीनियरों ने शहर के प्राकृतिक ढलान का सही उपयोग किया था, जिससे पानी बिना किसी पंपिंग के स्वतः बहता रहता था।

ठोस कचरा नियंत्रण

आधुनिक शहरों में प्लास्टिक और कचरे के कारण नालियाँ बंद हो जाती हैं, जबकि मोहनजोदड़ो का 'सोकपिट' मॉडल ठोस कचरे को मुख्य नालियों में जाने से रोकता था।

नालियों का नियमित रखरखाव

आधुनिक शहरों में बारिश से पहले नालियों की सफाई न होना बाढ़ का कारण बनता है, जबकि मोहनजोदड़ो में 'मैनहोल' का होना नियमित सफाई का प्रमाण है।

नगर का सामाजिक ढांचा और वर्ग-विभाजन

मोहनजोदड़ो का नगर नियोजन केवल उत्कृष्ट वास्तुकला को ही नहीं बल्कि यह उस समय समाज की सामाजिक-आर्थिक संरचना और वर्ग-विभाजन को भी स्पष्ट रूप से दर्शाता है।⁽⁸⁾ किसी भी प्राचीन सभ्यता का बाहरी ढाँचे और शहरी नियोजन से यह ज्ञात होता है कि उस समाज में संसाधनों, राजनीतिक शक्ति और स्थान का वितरण किस प्रकार किया गया था। पुरातात्विक साक्ष्यों के स्थानिक अध्ययन से यह पता चलता है कि मोहनजोदड़ो में एक सुव्यवस्थित 'स्थानिक वर्गीकरण' मौजूद था, जो समाज में निहित विभिन्न सामाजिक स्तरों, व्यावसायिक विविधता और श्रम-विभाजन को दर्शाता है।⁽⁹⁾

मोहनजोदड़ो का संपूर्ण नगर दो प्रमुख हिस्सों में विभाजित था: 'दुर्ग' (Citadel) और 'निचला नगर' (Lower Town)। नगर के पश्चिमी भाग में स्थित 'दुर्ग' क्षेत्र आकार में छोटा था, किंतु इसे सुरक्षा की दृष्टि से पकी ईंटों के अत्यंत ऊँचे चबूतरों पर निर्मित किया गया था। दुर्ग क्षेत्र में महान स्नानागार, विशाल अन्नागार तथा पिलर वाले सभा भवन जैसी भव्य और सार्वजनिक इमारतें बनाई गई थी।⁽¹⁰⁾ इस परिसर की घेराबंदी और इसका ऊँचाई पर स्थित होना यह बताता है कि यह क्षेत्र समाज के विशिष्ट वर्ग, जैसे पुरोहितों, प्रशासनिक अधिकारियों या समृद्ध शासक वर्ग, का केंद्र था। इस वर्ग का कार्य धार्मिक अनुष्ठानों, आर्थिक संसाधनों और नगर के प्रशासनिक ढाँचे को पूरी तरह से नियंत्रित करना था।

दूसरी ओर, पूर्वी दिशा में विस्तृत क्षेत्र में फैला निचला नगर आम नागरिकों, समृद्ध व्यापारियों, शिल्पकारों और श्रमिकों का मुख्य आवासीय क्षेत्र था। इस आवासीय क्षेत्र में निर्मित मकानों की बनावट, उनका क्षेत्रफल और उपयोग की गई निर्माण सामग्री सामाजिक-आर्थिक विषमता को बहुत सूक्ष्मता से प्रकट करती है।⁽¹¹⁾ उत्खनन से प्राप्त अवशेषों से ज्ञात होता है कि नगर में मुख्य रूप से तीन प्रकार के आवासीय ढाँचे स्थित थे।

उच्च-वर्गीय आवास जो कि बड़े, दो मंजिला भवन थे जिनमें एक केंद्रीय प्रांगण, अनेक कमरे, निजी कुएँ और उन्नत स्नानागार बने हुए थे। ये संभवतः बड़े व्यापारियों या उच्च अधिकारियों के थे। मध्यम वर्गीय आवास, मध्यम आकार के घर थे जिनमें 3 से 5 कमरे और बुनियादी नागरिक सुविधाएँ मौजूद थीं, जो शिल्पकारों और छोटे व्यापारियों के निवास स्थान थे। तीसरे श्रमिक वर्ग के आवास थे जो कि नगर के बाहरी किनारों पर स्थित एक या दो कमरों वाले अत्यंत छोटे बैरक-नुमा मकान होते थे। ये मकान आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और दैनिक मजदूरी करने वाले श्रमिकों के निवास स्थान थे।

मकानों के मुख्य द्वार सीधी मुख्य सड़कों पर न खुलकर पतली गलियों में खुलते थे, और बाहरी दीवार पर सड़क की ओर कोई खिड़की नहीं बनाई जाती थी। यह वास्तुकला उस दौर में व्यक्तिगत जीवन की गोपनीयता और सामाजिक मर्यादा के विशेष ध्यान को दर्शाती है। बिना किसी विशाल राजमहल, सम्राट की भव्य मूर्तियों या सैन्य साक्ष्यों के भी पूरे शहर में ईंटों के आकार (1:2:4 का अनुपात), सड़कों का समकोण (90°) पर काटना और उन्नत जल-निकासी की व्यवस्था यह सिद्ध करता है कि वहाँ के प्रशासन का ध्यान आम लोगों की सुविधाओं पर अधिक था।

मोहनजोदड़ो का व्यापारिक, आर्थिक एवं औद्योगिक ढाँचा

मोहनजोदड़ो की आर्थिक व्यवस्था केवल स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित ना होकर एक सुगठित, बहुआयामी और अधिशेष-आधारित महानगर की अर्थव्यवस्था थी। नगर की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में होने वाला उन्नत कृषि उत्पादन था। ग्रीष्मकालीन बाढ़ के पश्चात नदी द्वारा छोड़ी गई प्राकृतिक गाद में गेहूँ, जौ, तिल, मटर और कपास जैसी फसलों की वृहद पैमाने पर खेती की जाती थी। विशेष रूप से सूती वस्त्रों का निर्माण, मोहनजोदड़ो की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्तंभ था, जिसने नगर को तत्कालीन कांस्य युगीन विश्व में वस्त्र निर्माण का एक बड़ा अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बना दिया। दुर्ग क्षेत्र में निर्मित विशाल अन्नागार नगर का एक मुख्य केन्द्र था जहाँ कृषकों से कर के रूप में वसूले गए तथा संकटकालीन आपदा के लिए और गैर-उत्पादक वर्ग (शिल्पकार, प्रशासनिक अधिकारी और पुरोहित) के लिए अनाज का संग्रहण किया जाता था।⁽¹²⁾

मोहनजोदड़ो में औद्योगिक और शिल्प उत्पादन का कार्य शहर के अलग-अलग इलाकों में बांटा गया था। उत्खनन से प्राप्त कार्यशालाओं के अवशेष यह सिद्ध करते हैं कि मनके बनाने, शंख-शिल्प, हाथीदांत की नक्काशी और धातु-ढलाई जैसे जटिल उद्योगों के लिए नगर में विशेष रास्ते निर्धारित थे। मनकों के निर्माण में कार्वेलियन, लापिस लाजुली, जैस्पर, स्फटिक और स्टेलाइट जैसे दुर्लभ पत्थरों को तराशने, उनमें अति-सूक्ष्म छिद्र करने और उन्हें पॉलिश करने के लिए उच्च स्तरीय तकनीकों का उपयोग किया जाता था। तांबे और कांस्य के उपकरण जैसे कुल्हाड़ियाँ, आड़ियाँ, छेनी, चाकू और बर्तन घरेलू उपयोग हेतु बनाए जाते थे। ये उपकरण धातु ढलाई की श्लुप्त मोम विधि जैसी उन्नत तकनीकों के प्रयोग को भी दर्शाते हैं।⁽¹³⁾

मोहनजोदड़ो की व्यापार व्यवस्था को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए मानकीकृत बाट-माप प्रणाली निर्धारित थी। चर्ट और एगेट पत्थरों से निर्मित घनाकार बाटों का उपयोग लेन-देन प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता और निष्पक्षता बनाए रखने हेतु किया जाता था। यह माप-तौल प्रणाली छोटे मापों के लिए बाइनरी एवं बड़े मापों के लिए दशमलव पद्धति का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती थी, जो प्रशासनिक एकरूपता को सिद्ध करती है। इसके अलावा चौकोर और आयताकार पत्थरों की मोहरों पर बने जानवरों जैसे एक सींघ वाला पशु, बैल या बाघ के चित्र और सिंधु लिपि के निशान केवल पूजा-पाठ के लिए नहीं थे। इनका इस्तेमाल सामान की बोरियों पर गीली मिट्टी से थप्पा लगाने के लिए किया जाता था ताकि मालिक की पहचान हो सके और सामान के असली होने की गारंटी दी जा सके।⁽¹⁴⁾

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में, मोहनजोदड़ो विश्व में एक बड़े व्यापारिक केंद्र के रूप में कार्य करता था। सिंधु नदी के नौकायन योग्य जलमार्गों से नावें माल लेकर अरब सागर के तटीय बंदरगाहों तक पहुँचती थीं। यहाँ से समुद्री एवं स्थलीय दोनों मार्गों से होकर दूर-दूर के देशों जैसे मेसोपोटामिया, दिलमुन (वर्तमान बहरीन), मगन (ओमान) और पारस की खाड़ी के साथ नियमित व्यापार होता था। मेसोपोटामिया के सुमेरियन और अक्कडियन कीलाक्षर अभिलेखों में श्मेलुहाश शब्द का उल्लेख मिलता है। इस शब्द का उपयोग सिंधु क्षेत्र के लिए ही किया जाता था। यहाँ से हाथीदांत की वस्तुएँ, कार्वेलियन मनके, सूती वस्त्र, तांबा और इमारती लकड़ी का निर्यात किया जाता था और बदले में चांदी और सोने का आयात होता था।⁽¹⁵⁾

मोहनजोदड़ो का अवसान का कारण और पुरातात्विक साक्ष्य

मोहनजोदड़ो जैसी महान सभ्यता का अंत प्राचीन इतिहास का सबसे रहस्यमयी और विवादित विषय रहा है। आधुनिक पुरातात्विक खोजों और वैज्ञानिक अध्ययनों से यह स्पष्ट हो चुका है कि इस महान नगर का पतन किसी एक अचानक घटना, युद्ध या केवल एक ही कारण से नहीं हुआ था। पर्यावरण में लंबे समय से हुए बदलावों, नदी का मार्ग बदलना, जलवायु विषमताओं और आंतरिक सामाजिक-आर्थिक कमजोरी जैसे कई कारण नगर के पतन हेतु जिम्मेदार थे।

बाह्य आक्रमण सिद्धांत का खंडन

20वीं सदी के मध्य में मॉर्टिमर व्हीलर जैसे ब्रिटिश पुरातत्त्वविदों ने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि मोहनजोदड़ो का विनाश बाह्य आक्रमणकारियों, विशेष रूप से आर्यों के आक्रमण के कारण हुआ था। इस तर्क का मुख्य आधार ऋग्वेद में उल्लिखित श्वरंदरश (किलों का विनाशक, इंद्र) शब्द और उत्खनन में सड़कों पर मिले 39 नरकंकाल थे।⁽¹⁶⁾ किंतु, आधुनिक भारतीय इतिहासकारों, मानवशास्त्रियों और वैज्ञानिक काल-निर्धारण तकनीकों ने इस सिद्धांत को पूरी तरह से नकार दिया है। भौतिक अवशेषों के सूक्ष्म निरीक्षण से यह प्रमाणित हुआ है कि इन नरकंकालों पर किसी भी प्रकार के सैन्य अस्त्र-शस्त्र की चोट या सामूहिक नरसंहार के साक्ष्य नहीं मिलते हैं। इसके अतिरिक्त, ये कंकाल अलग-अलग पुरातात्विक स्तरों से संबंधित हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि ये मौतें एक ही समय में हुए किसी युद्ध में नहीं, बल्कि विभिन्न कालखंडों में स्वाभाविक मौतों या महामारी के कारण हुई थीं।

सिंधु नदी के प्रवाह मार्ग में परिवर्तन एवं विनाशकारी बाढ़

मोहनजोदड़ो के पतन में सिंधु नदी की दोहरी भूमिका की सबसे बड़ी देन रही। जिस नदी ने इस महान नगर को जीवन और समृद्धि दी, वही अंततः इसके पतन का कारण बनी। पुरातात्विक उत्खननों से मोहनजोदड़ो में गाद की कई परतें मिली हैं, जो यह दर्शाती हैं कि इस नगर में इतिहास में कम से कम सात से आठ बार भीषण मानसूनी बाढ़ें आई होंगी।⁽¹⁷⁾ हर बाढ़ के बाद नागरिकों ने ईंटों के ऊंचे चबूतरों पर नगर को पुनः बसाया। किंतु बार-बार आने वाली बाढ़ से नगर की बुनियादी संरचना को भारी नुकसान पहुंचा। सिंधु नदी के रास्ता बदलने के कारण मोहनजोदड़ो के विस्तृत कृषि क्षेत्र को जल मिलना कठिन हो गया और यह क्षेत्र शुष्क हो गया। इस कारण नगर के लिए खाद्य सुरक्षा बनाए रखना असंभव हो गया।

जलवायु परिवर्तन और दीर्घकालिक शुष्कता

पर्यावरण-वैज्ञानिक अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि लगभग 1900 ईसा पूर्व के आसपास दक्षिण-पश्चिम मानसून कमजोर पड़ गया, जिससे इस क्षेत्र में दीर्घकालिक सूखा और अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई।⁽¹⁸⁾ वर्षा में कमी के कारण कृषि उपज और खाद्य अधिशेष समाप्त हो गया। अनाज की कमी से गैर-उत्पादक आबादी (जैसे शिल्पकार, व्यापारी, प्रशासनिक अधिकारी और पुरोहित वर्ग) का भरण-पोषण मुश्किल हो गया, जिससे पूरे नगर की व्यवस्था बिगड़ गई।

व्यापारिक नेटवर्क का टूटना और वि-शहरीकरण

कृषि और औद्योगिक उत्पादन में गिरावट का सीधा प्रभाव मोहनजोदड़ो के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर पड़ा। लगभग 1900 ईसा पूर्व के आसपास मेसोपोटामिया के अभिलेखों में श्मेलुहार (सिंधु क्षेत्र) के साथ होने वाले व्यापार का उल्लेख समाप्त हो जाता है।⁽¹⁹⁾ दूरस्थ व्यापार के रुकने से मुख्य अधिकारियों का नियंत्रण समाप्त हो गया। नगर में लोगों ने नियम व कानूनों को मानना बन्द कर दिया। सड़कों पर अनियोजित निर्माण होने लगे। ईंटों के मानकीकरण (1:2:4) का उल्लंघन हुआ और जल-निकासी की नालियाँ कचरे से बंद होने लगीं। अंततः, यह महानगरीय सभ्यता कई छोटी-छोटी ग्रामीण संस्कृतियों में बंट गई। जिसे इतिहास में वि-शहरीकरण या उत्तर-हड़प्पा चरण कहा जाता है।

मोहनजोदड़ो का नगर नियोजन मानव इतिहास का पहला ऐसा उदाहरण है जहाँ उत्कृष्ट कांस्य युगीन वास्तुकला के साथ-साथ लोगों के समान अधिकारों, जन-स्वास्थ्य एवं पर्यावरण-अनुकूलन को भी अत्यधिक महत्व दिया गया था। किसी विशाल सेना अथवा राजतंत्र के साक्ष्य प्राप्त ना होने के बावजूद भी पूरे नगर में 1:2:4 अनुपात की मानकीकृत ईंटों, 90° पर कटती ग्रीड सड़कों और ढकी हुई जल-निकासी प्रणाली का कठोरता से पालन किया जाता था। इससे स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की वास्तविक शक्ति उसके हथियारों में नहीं, बल्कि वहां के नागरिकों में, स्वनियंत्रित समाज में और एक मजबूत नागरिक परिषद में निहित थी।

21वीं सदी के आधुनिक भारत में जहाँ बड़े महानगर मानसूनी जलभराव, सीवर अवरोध और जन-स्वास्थ्य संबंधी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, वहीं 4500 वर्ष पूर्व मोहनजोदड़ो द्वारा विकसित सोकपिट मॉडल, प्राकृतिक ढलान का सही उपयोग और अपशिष्ट जल का निस्तारण आज के स्मार्ट सिटी अभियानों के लिए एक प्रेरणा प्रस्तुत करता है।

यद्यपि सिंधु नदी के प्रवाह-मार्ग में परिवर्तन, जलवायु विषमताओं और प्राकृतिक आपदाओं ने इस नगर का अंत कर दिया, किंतु इसकी स्थापत्य चेतना और नागरिक मूल्य कभी नष्ट नहीं हुए। मोहनजोदड़ो का इतिहास संपूर्ण मानव सभ्यता को यह संदेश देता है कि किसी व्यवस्थित एवं सुरक्षित नगर का निर्माण केवल गगनचुंबी इमारतों या विशाल ढाँचों से नहीं, मजबूत जल-प्रबंधन, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और जागरूक नागरिक बोध से ही संभव होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राव, एस. आर. (1973). लोथल एंड द इंडस सिविलाइजेशन. बॉम्बे: एशिया पब्लिशिंग हाउस.
2. रत्नागर, शिरीन (2001). अंडरस्टैंडिंग हड़प्पा: सिविलाइजेशन इन द ग्रेटर इंडस वैली. नई दिल्ली: तुलिका बुक्स.
3. अग्रवाल, डी. पी. (2007). द इंडस सिविलाइजेशन: एन इंटरडिसिप्लिनरी परस्पेक्टिव. नई दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल.
4. शर्मा, रामशरण. (2009). प्रारंभिक भारत का परिचय. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.
5. थापर, रोमिला. (2008). भारत का इतिहास: प्रारंभ से 1300 ई. तक. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
6. झा, द्विजेंद्र नारायण. (2015). प्राचीन भारत का इतिहास. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.
7. श्रीवास्तव, कृष्ण चंद्र. (2017). प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति. इलाहाबाद: यूनाइटेड बुक डिपो.
8. शर्मा, रामशरण. (2009). प्रारंभिक भारत का परिचय. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.
9. थापर, रोमिला. (2008). भारत का इतिहास: प्रारंभ से 1300 ई. तक. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
10. झा, द्विजेंद्र नारायण. (2015). प्राचीन भारत का इतिहास. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय.
11. श्रीवास्तव, कृष्ण चंद्र. (2017). प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति. इलाहाबाद: यूनाइटेड बुक डिपो.
12. शर्मा, रामशरण (2008). प्रारंभिक भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.
13. चक्रवर्ती, दिलीप कुमार (2006). द ऑक्सफोर्ड कम्पेनियन टू इंडियन आर्कियोलॉजी. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
14. रत्नागर, शिरीन (2004). ट्रेडिंग एनकाउंटर्स: फ्रॉम द यूफ्रेट्स टू द इंडस इन द ब्रॉन्ज एज. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
15. थापर, रोमिला (2003). द पेंगुइन हिस्ट्री ऑफ अर्ली इंडिया: फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ई. 1300. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया.
16. शर्मा, रामशरण (2008). प्रारंभिक भारत का सामाजिक और आर्थिक इतिहास. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.
17. अग्रवाल, धर्मपाल (2007). द इंडस सिविलाइजेशन: एन इंटरडिसिप्लिनरी परस्पेक्टिव. नई दिल्ली: आर्यन बुक्स इंटरनेशनल.
18. चक्रवर्ती, दिलीप कुमार (2006). द ऑक्सफोर्ड कम्पेनियन टू इंडियन आर्कियोलॉजी. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
19. थापर, रोमिला (2003). द पेंगुइन हिस्ट्री ऑफ अर्ली इंडिया: फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ई. 1300. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स इंडिया.

